चतुर्थ अध्याय

'युगे - युगे क्रान्ति' नाटक के संवाद

चतुर्थ अध्याय

• युगे - युगे क्रांति • नाटक के संवाद •

प्रास्ताविक --

संवाद तो नाटकों का प्राण होते हैं। इसीसे कथावस्तु आगे बढती है। पात्रों के चरित्रपर प्रकाश डालने का काम भी संवाद ही करते हैं। इसी दृष्टि से देखा जाय तो 'युगे-युगे क्रांति' नाटक के संवाद सजीव गतिशील और पात्रों के अनुसार है। किसी काल की सामाजिक परिस्थिति का परिचय भी पात्रों के संवादों से प्राप्त होता है। सुरेशचन्द्र शुक्ल संवाद का महत्व बताते हुए लिखते हैं --

• नाटयकृति का अत्यंत महत्वपूर्ण अंग उसका संवाद तत्व है। साहित्य की अन्य विधाओं से इसका वैभिन्न्य संवादात्मक स्तरपर ही होता है और यही संवादात्मक रूप सीधे-साधे रंगमंचीय पक्ष अभिनेता एवं उसके, समक्ष प्रस्तुत दर्शक से जुडा है। नाटककार के कृतित्व का संवाहन संवादों के माध्यम से ही अभिनेता रंगमंचपर दर्शकोतक करता है।•[१] इससे नाटक में संवादों का महत्व स्पष्ट होता है।

'युगे-युगे क्रांति' नाटक में चित्रित संवाद स्वाभाविक, चुटीले, सजीव, पात्रानुकूल, परिस्थित्यानुकूल हैं। कहीं कहीं संवाद लम्बे हैं लेकिन वह स्वाभाविक लगते हैं। नाटक में ऐसे संवाद भी आ गए हैं कि जिनसे अंतर्द्वन्द्व भावनाओं तथा पात्रों का मनोविज्ञान प्रस्तुत करने की क्षमता भी है।

---

१ डॉ. सुरेशचंद्र शुक्ल - आधुनिक हिन्दी नाटक - पृ.१३२।

४.१ सामाजिक परिस्थिति को उद्घाटित करनेवाले संवाद --

रामकली और कल्याणसिंह दोनों पति-पत्नी हैं और उनके बीच में बातें हो रही हैं।

• रामकली - तेज रोशनी करके क्या मुझे जग हसाई करानी है ? मैं क्या कोठेवाली हूँ ?

कल्याणसिंह - छी छी ऐसी बात भी कोई मुँह से निकालता है।.... जानती नहीं तुम मेरी घरवाली हो।

रामकली - हम कुलीन लोग हैं। यहीं कुल-रीत है। बडे बुजुर्गो के रहने दिन में जवान लोग अपनी घरवाली का मुँह देखा नहीं करते। दिन में उसके पास नहीं आते।• [१]

उपर्युक्त संवाद से हम यह जान जाते हैं कि इ.स.१८७५ में पति अपनी पत्नी का मुँह नहीं देख सकता था। क्योंकि तब समाज में यह प्रथा रूढ थी कि बडों के सामने पति कोई ऐसी हरकत करे तो यह बेअदबी तथा बेशर्मी की बात मानी जाती थी।

४.२. बाप संघर्ष को उद्घाटित करनेवाले संवाद --

प्रस्तुत नाटक में संवादों के माध्यम से संघर्ष का उद्घाटन हुआ होता है। जैसे ---

• कल्याणसिंह - अब होने दो। मुझे किसी की चिंता नहीं कोई भी आ जाए। .... यह भी अजीब मुसीबत है पति अपनी पत्नी के पास भी नहीं बैठ सकता ओह ये बूढे लोग।•[२]

दूसरी पीढी में कल्याणसिंह का बेटा प्यारेलाल विधवा से विवाह करना चाहता है। तब बाप - बेटों में संघर्ष होता है।

---

१ विष्णु प्रभाकर - युगे युगे क्रांति - पृ.१३-१४।

२ वही पृ.२०।

• कल्याणसिंह - तूने होश में आकर किया या जोश में आकर, लेकिन सुन ले, मैं ऐसा नहीं होने दूँगा । मैं तेरे हाथ पैर तोड दूँगा ।

प्यारेलाल - आप मेरे हाथ-पाँव तोड सकते हैं लेकिन मेरी प्रतिज्ञा नहीं तोड सकते । मेरी जान ले सकते हैं लेकिन मुझे उससे विवाह करने से नहीं रोक सकते मैं अपनी प्रतिज्ञा पूरी करके ही रहूँगा ।• [१]

तीसरी पीढी में भी संघर्ष है जो संवादों से प्रकट होता है । प्यारेलाल की बेटी शारदा गांधीजी के असहयोग आंदोलन में भाग लेती है और भाषणबाजी करती है । उसे पुलिस जेल ले जाती है । इसी बातपर उसका पिता चिढा हुआ है ।

प्यारेलाल - तुम छुडाने की बात कहती हो,अगर वह छूट भी आए तो मैं उसे इस घर में नहीं आने दूँगा ।• [२]

चौथी पीढी में शारदा और विमल का पुत्र प्रदीप परधर्मी जैनेट से शादी करता है । विमल धर्मपरिवर्तन की बाते करता है । लेकिन प्रदीप मानता नहीं तब विमल कहता है --

• अगर वह धर्म परिवर्तन नहीं करती तो इस घर में तुम्हारे लिए कोई जगह नहीं है ।... ... मेरा तेरा अब कोई संबंध नहीं है ।.... मेरा ही बेटा होकर मेरे साथ परिहास करता है । बेशर्म,आज से तू मेरे लिए मर गया मैं अपनी जायदाद में से तुझे कोई हिस्सा नहीं दूँगा ।• [३]

उपर्युक्त सभी संवादों में बाह्य संघर्ष दिखायी देता है ।

४.३ अंत:संघर्ष को उद्घाटित करनेवाले संवाद --

नाटक में कुछ ऐसे भी संवाद हैं कि व्यक्ति के मन का संघर्ष स्पष्ट करते हैं ।

---

१ विष्णु प्रभाकर - युगे-युगे क्रांति - पृ.२७ ।

२ वही पृ.४३ ।

३ वही पृ.५९-६० ।

जैसे --

• प्रदीप - लेकिन यह संघर्ष कभी नहीं रुका । रुकेगा भी नहीं । जैसे अन्विता और अनिरुध्द हम ही हैं । जब मैं उससे विवाह कर रहा था, तो मुझे लग रहा था कि जैसे मैं स्वयं अपने-आपको उत्तर दे रहा हूँ । जैसे मेरे सामने अनिरुध्द नहीं है मैं ही अपने विरुध्द खडा हूँ ।• १

देवीप्रसाद एक ओर उसकी बेटी ने स्वयं अपने लिए योग्य वर की तलाश करके शादी की इसी में खुश है तो दूसरी ओर अपना अधिकार जताता हुआ कहता है --

• देवीप्रसाद - नहीं - नहीं । यह नहीं हो सकता मैं इसी क्षण उसके पास जाऊँगा । मैं उसका पिता हूँ । उसे मुझसे पूछे बिना विवाह करने का अधिकार नहीं ।• २

इस तरह प्रस्तुत नाटक के संवादों में अंतर्संघर्ष को व्यक्त करने की ताकद है ।

४.४ प्रेम की भावना से युक्त संवाद --

नाटक में बीच-बीच में प्रेम की भावना भरे संवाद भी दिखाई देते हैं -- जैसे --

• कल्याणसिंह - सच-सच बताना, तुम्हारा मन नहीं करता कि तुम मुझे देखो ? बोलो ना । जवाब क्यों नहीं देती । इसका मतलब है कि तुम्हारा मन भी करता है । करना भी चाहिए । .... तुम मुझे प्यार करती हो मैं तुम्हे प्यार करता हूँ और जो किसी को प्यार करता है वह उसे देखना भी चाहता है ।•३

---

१ विष्णु प्रभाकर - युगे युगे क्रांति - पृ.८२ ।

२ वही पृ.८८ ।

३ वही पृ.१७ ।

एक और उदाहरण देखिए --

विमल	-	(भावावेश) मेरी झाँसी की रानी,अब तुम जान गई मैं क्यों तुम्हे अपना बनाना चाहता हूँ,इसी कारण ।
शारदा	-	(शरारत से) केवल इसी कारण ?
विमल	-	नहीं - नहीं एक और भी कारण है ।.... तुम्हारी आँखें बडी सुन्दर हैं, क्या नहीं हैं ?
शारदा	-	(लजाकर)तो उससे क्या ?
विमल	-	आँखें दिल का दर्पण होती है । तुम्हारा दिल भी सुन्दर है । इसीलिए मैं तुम्हें प्यार करता हूँ ।[१]

इस तरह नाटक में कल्याणसिंह - रामकली तथा शारदा - विमल के संवादों में प्रेम की भावना दिखाई देती है ।

४.५ छोटे-छोटे,संक्षिप्तता से युक्त संवाद --

नाटक में छोटे संवाद भी दिखाई देते हैं जिसके कारण नाटक की कथावस्तु गतिमान बन जाती है । संवादों के संक्षिप्तता के बारे में सुरेशचंद्र शुक्ल जी कहते है - " संक्षिप्तता एक ऐसा गुण है कि जितने संवाद संक्षिप्त होगें उतनाही प्रभाव तीव्र होगा ।"[२] जैसे ---

कल्याणसिंह	-	तो देखती क्यो नहीं ।
रामकली	-	डर जो लगता है ।
रामकली	-	बडे वो हो । मतलब तुम्हारा और फँसाना मुझे चाहते हो ।[३]
अन्विता	-	मैं पिछड गई हूँ ? (हसकर) यह कैसे बुआजी ?
सुरेखा	-	.... तुम्हारी आयु क्या है ?

---

१ विष्णु प्रभाकर - युगे युगे क्रांति - पृ.४८ ।

२ डॉ.सुरेशचंद्र शुक्ल - आधुनिक हिन्दी नाटक - पृ.१३३ ।

३ विष्णु प्रभाकर - युगे युगे क्रांति - पृ.१७-१८ ।

अन्विता - २६ वर्षों

सुरेखा - और अनिरुध्द की ?

अन्विता - २४ वर्ष

सुरेखा - तुम विवाह में विश्वास करती हो, क्योंकि विवाह करने जा रही हो ।

अन्विता - निश्चय ही करती हूँ लेकिन इससे क्या ?" [१]

नाटक में कथावस्तु को गति देनेवाले भी संवाद आए हैं । जैसे --

" सार्जेण्ट - यह मजमा गैर - कानूनी है । मैं हुक्म देता हूँ कि तुम लोग यहाँ से चली जाओ ।

शारदा - हम यहाँ से जाने के लिए नहीं आई है । पिकेटिंग करने के लिए आई है । हम पिकेटिंग करेगी ।

सार्जेण्ट - तब मुझे अफसोस है । मुझे आपको गिरफ्तार करने का हुक्म है ।

शारदा - आप बडी खुशी से उस हुक्म का पालन कर सकते है ।

सार्जेण्ट - लेकिन मैं फिर आपसे कहता हूँ कि आप चली जाएँ । आप स्त्रियाँ हैं । आपको घरों में रहना चाहिए ।" [२]

" पहला पुरुष - नहीं, क्रांतिकारी मैं हूँ । तुम सब संस्कृति के शत्रु हो ।

दूसरा पुरुष - नहीं तुम प्रतिक्रियावादी हो । क्रांतिकारी मैं हूँ (दिशा बदलकर) संस्कृति के शत्रु मेरे बाद आनेवाले ये लोग ।

पहली नारी - नहीं नहीं हम संस्कृति के शत्रु नहीं हैं । तुम क्रांतिकारी हो । तुम विशुध्द प्रतिक्रियावादी हो । क्रांतिकारी मैं हूँ (दिशा परिवर्तन) संस्कृति की शत्रू है मेरी संतान ।

---

१ विष्णु प्रभाकर - युगे-युगे क्रांति - पृ.७९ ।

२ वही पृ.३९ ।

तीसरा पुरुष - नहीं - नहीं - नहीं तुम्हारा स्वर भी प्रति क्रियावादी स्वर है मैं संस्कृति का शत्रु नहीं हो सकता । मैं उसे नया रूप देनेवाला । क्रांतिकारी हूँ, (दिशा बदलकर) और दिशा भ्रष्ट है ये लोग जो मेरे बाद आए है ।" [१]

इस तरह हम देखते है कि नाटक मैं कई जगह छोटे,संक्षिप्तता रखने वाले संवाद आए है जिस कारण नाटक को गति मिलती है ।

४.६ स्वभावगत या चरित्रगत विशेषता प्रकट करनेवाले संवाद --

प्रस्तुत नाटक मैं कहीं - कहीं ऐसे संवाद है कि उन संवादों के कारण पत्रों का चरित्र तथा स्वभाव ध्यान मैं आता है । जैसे शारदा कहती है --" आपकी सलाह के लिए धन्यवाद । लेकिन हम अब समझ गई हैं कि यह सलाह गलत है । स्त्रियाँ घरों मैं रहने के लिए नहीं होती । वे दिन अब लद गए । क्या तुम नहीं जानते कि, आदिशक्ति,महाचंडी,महामाया,महाकाली ये सभी स्त्रियाँ थीं । इस - लिए हम अब घर नही जाएँगी । विदेशी कपडों की होली जलाकर दासतारूपी दानव का संहार करेंगी ।" [२]

...." मैं अपने पिताजी को जानती हूँ वे बडे कट्टर हैं । अपने दायरे से बाहर नहीं निकल सकते । इसलिए वे निश्चय ही मना कर देंगे । लेकिन मैं बालिग हूँ । अपना भविष्य बनाने का मुझे अधिकार है ।"[३]

इससे ही हम शारदा का स्वभाव जानते हैं कि वह स्वतंत्रता के लिए घर से बाहर आनेवाली लडकी है ।

सुरेखा के संवादों से यह समझ मैं आता है कि वह समय का साथ देनेवाली लडकी है । वह कहती है ---

---

१ विष्णु प्रभाकर - युगे-युगे क्रांति - पृ.१० ।

२ वही पृ.३९-४० ।

३ वही पृ.४७ ।

" युग की पुकार सुनना यदि रंग चढना है,तो मैं इसे अपना गौरव समझूँगी । लेकिन पिताजी एक बात कहती हूँ - जैसे सागर के ज्वार को आदेश नहीं दिया जा सकता,वैसे ही नई पीढी की आकांक्षाओं को भी अपनी सुविधा के अनुसार नहीं मोडा जा सकता ।" [१]

अनिरुध्द के कथनों से यह स्पष्ट होता है कि वह एक ऐसा लडका है जो पाश्चात्य संस्कारों को ज्यादा महत्व देता है तथा उसके विचार अत्यंत आधुनिक हैं । अनिरुध्द का यह वक्तव्य देखिए --

" विवाह हमारे समाज में मात्र एक परंपराका पालन है ।..... स्त्री के लिए पति अनिवार्य नहीं है । पुरूष अनिवार्य है । .... प्रेम करने के लिए सर्टिफिकेट की आवश्यकता नहीं होती । प्रेम मुक्ति में है बंधन में नहीं विवाह स्त्री की गुलामी का पट्टा है इसलिए बन्धन है ।" [२]

अनिरुध्द की तरह अन्विता भी अत्याधुनिक स्त्री का प्रतिनिधित्व करती है । यह उसके संवादों से स्पष्ट होता है । अन्विता का यह कथन देखिए --

" पुरानी पीढी के लोग पुरातन पंथी ही तो हो सकते हैं । लेकिन मैं आपसे झगडा करने नहीं आई । आपअपने रास्ते पर चलने के लिए स्वतंत्र हैं । परंतु डैडी ? दुनिया बहुत तेजी से आगे बढ रही है । हम अगर समय के साथ नहीं चलेंगे तो पिछड जाएँगे । बीता हुआ हर क्षण मर जाता है और जो उसके पीछे भागते रहते हैं वे भी फॅासिल बनकर रह जाते हैं ।" [३]

उपर्युक्त संवादों से हमें शारदा,सुरेखा,अनिरुध्द तथा अन्विता आदि लोगों के स्वभाव का तथा चरित्र का उद्‌घाटन दिखाई देता है ।

---

१ विष्णु प्रभाकर - युगे-युगे क्रांति - पृ.६२ ।

२ वही पृ.७३-७४ ।

३ वही पृ.७७-७८ ।

४.७ दीर्घ या लम्बे संवाद --

प्रस्तुत नाटक में कहीं कहीं दीर्घ या लम्बे-लम्बे संवाद भी दिखाई देते है। इसके बारे में डॉ.श्रीमती रीताकुमार लिखती है --

" संवादों में अति-विस्तार और प्रचारात्मक दृष्टिकोण तथा कथावस्तु अपने विषय को उल्लेखनीय नाटयकृति का रूप नहीं दे सका।" [१]

इसमें कहीं कहीं देवीप्रसाद, सूत्रधार और शारदा के संवाल लम्बे हो गए हैं लेकिन वह कथावस्तु के विकास में बाधा नहीं बनते बल्कि सहायक ही सिध्द होते हैं। इसमें प्रसंगानुकूल लम्बे संवाद आए है इसीलिए नाटक की कथा को इनसे कोई हानि नहीं पहुँची।

सूत्रधार के संवाद देखिए --

" यह चक्र कभी नहीं रुकता। जो आज क्रांति करने का दावा करते हैं कल वे ही प्रतिक्रियावादी हो जाते हैं। इतिहास बार-बार अपने को दोहराता है। वे समझते हैं उन्होंने समय को पकड लिया है लेकिन जादूगर काल उन्हें फाँकी देकर न जाने कब आगे बढ जाता है और उसके मंचपर आ जाती है नई पीढी जो उसके लिए अजनबी होती है। प्यारेलाल ने अपने माता-पिता के विरुध्द विद्रोह किया, लेकिन जब उनकी अपनी लडकी ने समय का साथ देने का प्रयत्न किया तो वह आग-बबूला हो उठे। यह गाँधीजी के असहयोग आंदोलन का प्रारंभिक युग है। चारों तरफ उत्तेजना फैली है। असंख्य युवक उस जादूगर के प्रभाव में आ चुके हैं। युवतियाँ भी पीछे नहीं हैं। प्यारेलाल की बेटी शारदा भी उन्हीं में है। घर की चार दीवारीं लाँघकर वह समाज में खुले मुँह ही नहीं घूमती बल्कि उसके सिर का पल्ला भी खिसककर कन्धे पर आ गया है। वह केवल पुरुषों की तरह भाषण नहीं देती, रणचंडी की तरह आग भी उगलती है। .... अरे, तुम ऐसे पागलों की तरह क्या देख रहे हो[२]?"

---

१ डॉ.श्रीमती रीताकुमार - स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाटक : मोहन राकेश के संदर्भ में - पृ.४१।

२ विष्णु प्रभाकर - युगे-युगे क्रांति - पृ.३४-३५।

यहाँ शारदा का एक और कथन देखिए --

प्यारी बहनों, मैं तुम्हें अपनी कहानी सुना रही थी । मैं पूरे विश्वास के साथ आपसे कहती हूँ कि जिस दिन मेरे सुधारक पिता श्रीमान प्यारेलालजी ने मेरे बाजार में मेरे गाल पर इसलिए थप्पड मारा था कि मेरी साडी का पल्ला सिर से उतर गया था तो मैंने उसी दिन निश्चय कर लिया था कि मैं इन पुराने दकियानूसी रीति-रिवाजों को अब और नहीं मानूँगी । रहा होगा कभी किसी युग में सिर ढकना अच्छी बात । रहा होगा कभी नारी का घर की चार दीवारों में बंद रहना अच्छा, लेकिन आज इन बातों की कोई जरूरत नहीं है । हम इन्हें स्वीकार नहीं करेंगे । किसी दिन तो सिर से पैर तक चादर में लिपटना और छाती तक एक लम्बा घूँघट काढना यह सब अच्छा समझा जाता था । लेकिन आज मुँह खोलना पाप नहीं समझा जाता । फिर सिर खोलना ही पाप क्यों ? भगवान की कृपा से हमें अपने हौसले दिखाने का अच्छा अवसर मिल गया है । गांधीजी ने देश की आजादी के लिए असहयोग - आंदोलन करने का ऐलान किया है । उन्होंने कहा है कि, इस युध्द में नारी को भी पुरूष के कन्धे से कन्धा भिडाकर भाग लेने का अधिकार है । किसी समय राजपूत लोग लडने के लिए युध्द में जाते थे और उनकी नारियाँ उनके हार जाने पर सती होकर जल जाती थीं । आखिर वे भी मरती ही तो थीं । मैं कहती हूँ कि घर के अंदर बैठकर मरने से बेहतर है कि हम भी पुरूषों को तरह कष्टों का सामना करें और तब यदि मौत आए तो हँसते - हँसाते उसे गले से लगा ले । प्राचीन इतिहास में ऐसे उदाहरण कम है लेकिन अब समय बदल गया है । नारी पुरूष से किसी भी बात में पीछे नहीं है । उसके अधिकार समान है, उसके कर्तव्य भी समान है, इसलिए मेरी प्यारी बहिनों, हमने निश्चय किया है कि पुरूषों के साथ-साथ हम भी पिकेटिंग करेंगी, विदेश कपडों की होली जलाएँगी, विद्यार्थियों को सरकारी स्कूलों में नहीं जाने देंगी । वकीलों को कचहरी जाने से रोकेंगी । आज हम थोडी दिखाई देती है लेकिन यदि मेरी आवाज घर की दीवारों को फाँदकर अंत: पुरवासिणी मेरी माँओं और बहनों तक पहुँचती है तो मैं उनसे प्रार्थना करूँगी कि वे अपने को

पहचाने । वे शक्ति हैं,और शक्ति के मार्ग में घर की चार दीवारी तो क्या हिमालय जैसे नागाधिराज भी बाधा नहीं दे सकते ।" १

देवीप्रसाद के संवाद भी कहीं - कहीं लम्बे हैं -- जैसे --

" इसमें साथ न आने की क्या बात थी ? वह उन्हें समझाती । जितने विश्वास से वह जनता से बातें करती थी उतने ही विश्वास से यदि पिता से कहती तो शायद वे मान जातें । कम से कम मैं उनकी जगह होता तो बहुत खुश होता । आखिर मुझे लड़की के विवाह की परेशानियों से मुक्ति तो मिलती । तुम नहीं जानते मैं अपनी लड़की के विवाह को लेकर कितना परेशान हूँ । लेकिन मैं यह कभी नहीं स्वीकार कर सकता कि मेरी आज्ञा के बिना वह कुछ करे । आखिर मैं पिता हूँ । मेरे कुछ अधिकार हैं । वे कर्तव्य और अधिकार मुझे इसलिए तो प्राप्त हुए हैं कि मैं अधिक अनुभवी हूँ । हर बुजुर्ग अनुभवी होता है ।"२

उपर्युक्त संवाद लम्बे होते हुए भी नाटक में उचित लगते हैं । इन संवादों के कारण नाटक की कथावस्तु को कोई भी हानी नहीं पहुँचती ।

निष्कर्ष --

निष्कर्षतः प्रस्तुत नाटक संवाद योजना की दृष्टि से अत्यंत सफल है । इसके संवाद सामाजिक परिस्थिति को उद्घाटित करते हैं । संवादों से पात्रों का अंतर-बाह्य संघर्ष दृष्टिगोचर होता है । वार्तालाप से पात्रों की प्रेम-भावना प्रकट हुई है । इसमें एक एक ओर संक्षिप्त छोटे-छोटे तो दूसरी ओर दीर्घ,लम्बें लम्बें संवाद भी पाये जाते हैं, किन्तु ये सारे संवाद कथा विकास में सहायक सिद्ध होते

---

१ विष्णु प्रभाकर - युगे-युगे क्रांति - पृ.३६-३८ ।

२ वही पृ.५१-५२ ।

है। संवादों से ही इस नाटक के पात्रों की चरित्रगत विशेषताएँ स्पष्ट हुई है। निष्कर्षत: नाटक को सफल बनाने की दृष्टि से नाटककार ने संवाद योजना का पूरा खयाल रखा है। कुशल संवाद योजना के कारण प्रस्तुत नाटक अत्यंत सफल बन गया है।